Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों का समाज शास्त्रीय अध्ययन

गुड्डन [1*], डॉ. अनिता पाल [2]

[1] सहायक प्रोफेसर, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश, भारत

[2] परास्नातक शोधार्थिनी, समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *गुड्डन

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18957179

सारांश

भारतीय संस्कृति प्राचीन और समृद्ध परंपराओं पर आधारित है, जिसमें नैतिक मूल्यों का विशेष स्थान रहा है। भारतीय समाज के नैतिक सिद्धांत मुख्यतः वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता तथा अन्य धर्मग्रंथों में वर्णित शिक्षाओं से विकसित हुए हैं। इन ग्रंथों में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, त्याग, सेवा, सहिष्णुता और कर्तव्यपरायणता जैसे मूल्यों को जीवन का आधार माना गया है।

शास्त्रीय अध्ययन के अनुसार भारतीय संस्कृति में "धर्म" को नैतिक जीवन का प्रमुख आधार माना गया है। यहाँ धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि सही आचरण, न्याय और कर्तव्य पालन से है। प्राचीन ग्रंथों में बताया गया है कि व्यक्ति का आचरण केवल व्यक्तिगत हित के लिए नहीं, बल्कि समाज और समस्त मानवता के कल्याण के लिए होना चाहिए।

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में आदर्श जीवन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। रामायण में भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सत्य, कर्तव्य और आदर्शों के प्रतीक हैं। इसी प्रकार महाभारत और भगवद्गीता में कर्म, धर्म और नैतिकता के सिद्धांतों को स्पष्ट किया गया है। गीता में निष्काम कर्म का सिद्धांत यह सिखाता है कि मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन बिना स्वार्थ के करना चाहिए।

भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत चरित्र निर्माण नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और शांति की स्थापना भी है। परिवार, शिक्षा और समाज इन मूल्यों के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरु-शिष्य परंपरा, संयुक्त परिवार व्यवस्था और सामाजिक संस्कारों के माध्यम से इन मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया गया है।

अतः शास्त्रीय अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्य जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। ये मूल्य न केवल व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं, बल्कि समाज में सद्भाव, सहयोग और नैतिक व्यवस्था को भी मजबूत बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसमें नैतिक मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय समाज की मूल संरचना धर्म, कर्तव्य और सदाचार पर आधारित रही है। प्राचीन काल से ही वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता तथा स्मृति ग्रंथों में जीवन के आदर्श सिद्धांतों का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, परोपकार, त्याग, सहिष्णुता, प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा जैसे नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार माना गया है।

शास्त्रीय अध्ययन के अनुसार भारतीय संस्कृति में "धर्म" को नैतिक जीवन का मूल तत्व माना गया है। यहाँ धर्म का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकांडों से नहीं है, बल्कि सही आचरण, न्याय, कर्तव्यपालन और सामाजिक जिम्मेदारी से है। भारतीय दर्शन यह सिखाता है कि मनुष्य को अपने व्यक्तिगत हित के साथ-साथ समाज और मानवता के कल्याण के लिए भी कार्य करना चाहिए। इसी कारण भारतीय संस्कृति में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 26-02-2026
- **Published:** 11-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 103-106
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

गुड्डन, डॉ. अनिता पाल. भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों का समाज शास्त्रीय अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):103-106.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

© 2026 गुड्डन, डॉ. अनिता पाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भावना को विशेष महत्व दिया गया है, जिसका अर्थ है कि पूरी दुनिया एक परिवार के समान है।
भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत नैतिक मूल्यों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। रामायण में भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सत्य, कर्तव्य और आदर्श जीवन के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने जीवन में हर परिस्थिति में धर्म और नैतिकता का पालन किया। इसी प्रकार महाभारत में जीवन के अनेक नैतिक और सामाजिक सिद्धांतों का वर्णन मिलता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश कर्म, धर्म और नैतिकता की गहन व्याख्या करता है। गीता का निष्काम कर्म सिद्धांत यह सिखाता है कि मनुष्य को बिना स्वार्थ के अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।
भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का उद्देश्य केवल व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना नहीं, बल्कि समाज में शांति, समरसता और सहयोग की भावना को बढ़ाना भी है। परिवार, शिक्षा और सामाजिक संस्थाएँ इन मूल्यों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से गुरु-शिष्य परंपरा, संस्कार प्रणाली और संयुक्त परिवार व्यवस्था ने इन मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा है।
आधुनिक समय में भी भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य अत्यंत प्रासंगिक हैं। तेजी से बदलती जीवनशैली और भौतिकवाद के बीच ये मूल्य समाज को संतुलन, नैतिक दिशा और मानवता की भावना प्रदान करते हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का अध्ययन और पालन व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द: भारतीय संस्कृति नैतिक समाज नैतिक मूल्य सामाजिक मान्तायएँ

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि नैतिकता केवल व्यक्तिगत आचरण का विषय नहीं है बल्कि यह सामाजिक संरचना, परंपराओं, धर्म, परिवार और सामुदायिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। भारतीय समाज में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा और बड़ों का सम्मान जैसे मूल्य प्राचीन काल से ही सामाजिक जीवन का आधार रहे हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से ये मूल्य सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार, शिक्षा, धर्म और सामाजिक संस्थाएँ इन मूल्यों के संरक्षण और प्रसार के प्रमुख माध्यम हैं। आधुनिक, वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से इन मूल्यों के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य आया है, किन्तु भारतीय समाज में आज भी नैतिक मूल्य सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमुख स्तंभ के रूप में विद्यमान हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और विविधतापूर्ण संस्कृतियों में से एक है। इसकी जड़ें हजारों वर्षों पुरानी परंपराओं, धार्मिक ग्रंथों और दार्शनिक विचारों में निहित हैं। भारतीय समाज की संरचना नैतिक मूल्यों, आदर्शों और मानवीय गुणों पर आधारित रही है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, परोपकार, त्याग, सहिष्णुता और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को जीवन का आधार माना गया है। ये मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण के साथ-साथ समाज में शांति, सद्भाव और सहयोग की भावना को भी मजबूत बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का आधार मुख्यतः वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता और अन्य शास्त्रीय ग्रंथों में मिलता है। इन ग्रंथों में जीवन के आदर्श सिद्धांतों और आचरण के नियमों का विस्तार से वर्णन किया गया है। भारतीय दर्शन में "धर्म" को जीवन का प्रमुख तत्व माना गया है। यहाँ धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ या धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि सही आचरण, न्याय, कर्तव्यपालन और समाज के प्रति जिम्मेदारी से है।

भारतीय परंपरा में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को विशेष महत्व दिया गया है, जिसका अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार के समान है। यह विचार भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता और मानवता की भावना को दर्शाता है। इसके माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि मनुष्य को केवल अपने हित के लिए नहीं, बल्कि समाज और सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

भारतीय समाज में परिवार, शिक्षा और सामाजिक संस्थाएँ नैतिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से गुरु-शिष्य परंपरा, संस्कार व्यवस्था और संयुक्त परिवार प्रणाली ने इन मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखने का कार्य किया है।

वर्तमान समय में जब समाज तेजी से आधुनिकता और भौतिकवाद की ओर बढ़ रहा है, तब नैतिक मूल्यों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इसलिए भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों का शास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है, ताकि हम अपने सांस्कृतिक आदर्शों को समझ सकें और उन्हें अपने जीवन में अपनाकर एक सशक्त, नैतिक और समरस समाज का निर्माण कर सकें।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इसकी मूल आधारशिला नैतिक मूल्यों, आदर्शों और मानवीय गुणों पर टिकी हुई है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, त्याग, सहिष्णुता और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। ये नैतिक मूल्य केवल व्यक्ति के चरित्र निर्माण में ही सहायक नहीं होते, बल्कि समाज में शांति, सद्भाव और सहयोग की भावना को भी मजबूत बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का आधार मुख्यतः वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता तथा अन्य शास्त्रीय ग्रंथों में निहित है। इन ग्रंथों में जीवन जीने के आदर्श सिद्धांतों का वर्णन किया गया है, जो मनुष्य को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। भारतीय दर्शन में "धर्म" को जीवन का महत्वपूर्ण तत्व माना गया है, जो मनुष्य को अपने कर्तव्यों और नैतिक जिम्मेदारियों का बोध कराता है।

शोध साहित्य की समीक्षा

© 2026 गुड्डन, डॉ. अनिता पाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों जैसे वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत और गीता में नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार माना गया है।

(1) राधाकृष्णन (1951)[1] के अनुसार भारतीय संस्कृति में नैतिकता का मूल धर्म है जो व्यक्ति, समाज और ब्रह्मांड के बीच संतुलन स्थापित करता है।

(2) एम० एन० श्री निवास (1962)[2] ने संस्कृतिकरण की अवधारणा के माध्यम से बताया कि किस प्रकार नैतिक मूल्य सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। उनके अनुसार नैतिकता केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित न होकर सामाजिक प्रतिष्ठा और स्वीकार्यता का माध्यम भी बनती है।

(3) इरावती कर्वे (1965)[3] ने भारतीय परिवार को नैतिक मूल्यों के संप्रेषण की सबसे महत्वपूर्ण संस्था माना है। उनका मत है कि आज्ञाकारिकता, कर्तव्यबोध, त्याग और सम्मान जैसे मूल्य परिवार से आते हैं।

(4) योगेन्द्र सिंह (1986)[4] ने भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के कारण नैतिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार परंपरागत सामाजिक मूल्यों के स्थान पर, व्यक्तिवाद, भौतिकवाद और उपयोगितावादी दृष्टिकोण का विकास हो रहा है।

(5) ए० एल० बाशम (1967)[5] ने अपनी कृति (The Wonder That Was India) में स्पष्ट किया कि सत्य, अहिंसा, कर्तव्य, संयम और परोपकार भारतीय समाज के केंद्रीय नैतिक मूल्य रहे हैं।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान संदर्भ में भारतीय संस्कृति और समाज में नैतिकता का विश्लेषण एक अत्यंत प्रासंगिक एवं अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। भारतीय सामाजिक संरचना सदैव धर्म, सत्य, अहिंसा, कर्तव्य, त्याग और परोपकार जैसे नैतिक सिद्धान्तों पर टिकी रही है, हालाँकि समकालीन वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण एवं तकनीकी प्रगति के प्रभावस्वरूप सामाजिक ढाँचे में आए तीव्र बदलावों ने इन पारंपरिक नैतिक आधारों को क्षरित करना प्रारम्भ कर दिया है। यही परिस्थिति नैतिकता के एक समाजशास्त्रीय विवेचन की माँग को और अधिक प्रबल करती है।

आज के भारत में फैला भ्रष्टाचार, सामाजिक कट्टरता, पारिवारिक विखंडन, लैंगिक विषमता, हिंसा तथा मूल्यहीनता का संकट केवल आर्थिक या राजनैतिक नहीं बल्कि मूलतः एक गहन नैतिक संकट है। अतः यह शोध इस नैतिक द्वंद्व को समझने तथा उसके सामाजिक मूल कारण

2. शोध के उद्देश्य

- नैतिकता मूल्यों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
- समाज में नैतिकता की आवश्यकता पर विचार करना।
- भारतीय संस्कृति में निहित मूल तत्वों का नैतिकता से सम्बन्धित होना।
- समाज में नैतिकता बनाये रखने के लिए भारतीय संस्कृति के ज्ञान की विद्यालयों में आवश्यकता।

3. शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

वर्णनात्मक पद्धतिः यह एक शोध (त्मेमंतबी) की पद्धति है, जिसका उपयोग तथ्यों, घटनाओं, परिस्थितियों या वस्तुओं का विस्तृत और सटीक वर्णन करने के लिए किया जाता है।

वर्णनात्मक शोध विधि की विशेषताएँ

(1) वास्तविकता का चित्रण: यह घटना जैसी है, उसे वैसा ही बताती है, बिना बदले।

(2) तथ्य संग्रहः प्रश्नावली, साक्षात्कार, सर्वेक्षण, अवलोकन आदि तरीकों से डेटा (आंकड़े) लिया जाता है।

(3) विश्लेषण नहीं वर्णनः इनमें घटनाओं के कारकों या भविष्यवाणी की बजाय उनका सिर्फ वर्णन और वर्गीकरण किया जाता है।

(4) वर्तमान पर बलः यह आमतौर पर वर्तमान स्थिति, व्यवहार या समस्याओं का भी अध्ययन करती है।

उदाहरणः किसी गाँव की साक्षरता दर का सर्वे करके रिपोर्ट बनाना।

सूचना के संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रश्नावली तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में इस विषय पर शोध करते समय प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया जाता है। प्राथमिक स्रोतों में साक्षात्कार, प्रश्नावली, जिनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों से सीधे जानकारी प्राप्त की जाती है। द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नल, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना आंकड़े, एनसीईआरटी (छब्म्ज्), यूजीसी (न्ळब्) प्रकाशन, धार्मिक ग्रंथ (वेद, उपनिषद, गीता), सामाजिक सुधार आंदोलनों से संबंधित साहित्य तथा इंटरनेट आधारित विश्वसनीय स्रोत सम्मिलित होते हैं।

इन सभी स्रोतों के समन्वित उपयोग से भारतीय समाज में प्रचलित नैतिक मूल्यों की संरचना, परिवर्तन एवं सामाजिक प्रभाव का वस्तुनिष्ठ और प्रामाणिक अध्ययन किया जा सकता है।

डाटा संकलन के उपकरण

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों के समाजशास्त्रीय अध्ययन हेतु सूचना संकलन के लिए विभिन्न शोध उपकरणों का उपयोग किया जाता है। प्रमुख उपकरणों में प्रश्नावली, है। प्रश्नावली के माध्यम से बड़े समूह से व्यवस्थित जानकारी प्राप्त की जाती है, जबकि अवलोकन विधि से सामाजिक व्यवहार, परंपराओं और आचरण का प्रत्यक्ष अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त दस्तावेज विश्लेषण के अन्तर्गत पुस्तक, धार्मिक ग्रन्थ, शोध लेख, सरकारी रिपोर्ट और ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन किया जाता है। ये सभी उपकरण मिलकर भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की प्रकृति, संरचना और परिवर्तन को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

सूचनाओं का एकत्रीकरण

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों के समाजशास्त्रीय अध्ययन में सूचनाओं का एकत्रीकरण एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रक्रिया के अंतर्गत किया गया है। इसके लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से जानकारी संकलित की जाती है।

© 2026 गुड्डन, डॉ. अनिता पाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- प्राथमिक सूचनाएँः साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची, अवलोकन और समूह चर्चा के माध्यम से सीधे व्यक्तियों एवं समुदायों से प्राप्त की जाती हैं, जिससे उनके नैतिक विचार, मान्यताएँ और व्यवहार स्पष्ट होते हैं।

संकलित सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप से वर्गीकृत कर उनका विश्लेषण किया जाता है, जिससे भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की प्रकृति, परिवर्तन और सामाजिक प्रभाव को समझा जा सके।

4. शोध उद्देश्यों के आधार पर प्राप्त परिणामों की व्याख्या।

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों के समाजशास्त्रीय अध्ययन में शोध उद्देश्यों के आधार पर परिणामों की व्याख्या की जाती है, ताकि अध्ययन व्यवस्थित, तर्कसंगत और सार्थक बन सके। सबसे पहले निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप संकलित आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि नैतिक मूल्यों की उत्पत्ति, संरचना, परिवर्तन और सामाजिक प्रभाव किस प्रकार कार्य करते हैं।

परिणामों को विषयानुसार क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है और परिवार, शिक्षा, धर्म, मीडिया और अन्य सामाजिक संस्थाओं की भूमिका (देखी जाती है)। इसके साथ ही तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाकर यह देखा जाता है कि परंपरागत और आधुनिक मूल्यों में क्या अंतर एवं परिवर्तन आए हैं। इस प्रकार शोध उद्देश्यों के आधार पर परिणामों की व्यवस्थित प्रस्तुति भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की वास्तविक स्थिति और उनके सामाजिक महत्व को स्पष्ट करती है।

5. निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति एवं समाज में नैतिक मूल्यों के समाजशास्त्रीय अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नैतिक मूल्य भारतीय सामाजिक संरचना की आधारशिला हैं जो परिवार, धर्म, शिक्षा और परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होते रहे हैं। समय के साथ आधुनिकीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के प्रभाव से इन मूल्यों में परिवर्तन अवश्य आया है, फिर भी सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा और परोपकार जैसे मूलभूत आदर्श आज भी समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सामाजिक संस्थाएँ नैतिक मूल्यों के संरक्षण और पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का स्वरूप गतिशील होते हुए भी सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक एकता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है।

आभार

यह कार्य समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर (एम० ए०) उपाधि को पूर्ण करने हेतु प्रस्तुत किया जाने वाला शोध प्रोजेक्ट का एक भाग है। यह शोध कार्य गुड्डन द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर डा० अनीता पाल के निर्देशन में संपन्न किया गया है। इस कार्य में सहयोग के लिए लेखिका, डा० संगीता चौधरी, प्राचार्या ताराचन्द वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर के प्रति आभार व्यक्त करती हैय जिन्होंने आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराईं तथा निरंतर प्रोत्साहन दिया।

सन्दर्भ सूची

1. राधाकृष्णन एस. इंडियन फिलॉसफी. लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन; 1951.
2. श्रीनिवास एमएन. कास्ट इन मॉडर्न इंडिया एंड अदर एसेज. बॉम्बे: एशिया पब्लिशिंग हाउस; 1962.
3. कर्वे इरावती. किनशिप ऑर्गेनाइजेशन इन इंडिया. बॉम्बे: एशिया पब्लिशिंग हाउस; 1965.
4. सिंह योगेन्द्र. इंडियन सोसाइटी: सोशल चेंज एंड मॉडर्नाइजेशन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन; 1986.
5. बाशम एएल. द वंडर दैट वाज इंडिया. लंदन: सिजविक एंड जैक्सन; 1967.
6. घुर्ये जीएस. भारतीय साधु और समाज. मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन; 1969.
7. दुबे श्यामाचरण. भारतीय समाज. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस; 1990.
8. पार्सन्स टैल्कॉट. द सोशल सिस्टम. न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस; 1951.
9. कोठारी सीआर. शोध पद्धति: सिद्धांत एवं तकनीक. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल; 2004.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Authors

गुड्डन, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश, भारत) के समाजशास्त्र विभाग में परास्नातक शोधार्थिनी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि सामाजिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन और समकालीन सामाजिक मुद्दों के अध्ययन में है। वे समाजशास्त्रीय अनुसंधान तथा अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

डॉ. अनिता पाल, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश, भारत) में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उनका शैक्षणिक क्षेत्र समाजशास्त्र है। वे शिक्षण, शोध तथा सामाजिक मुद्दों से जुड़े अकादमिक अध्ययनों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं।

© 2026 गुड्डन, डॉ. अनिता पाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/